चंद्रगुप्त मौर्य:

- पृष्ठभूमि:
  - चंद्रगुप्त मौर्य का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना, बिहार) में एक साधारण परिवार में हुआ था।
  - वह मौर्य वंश से थे, जो क्षत्रिय योद्धा वर्ग का हिस्सा था।
- सत्ता में वृद्धि:
  - चंद्रगुप्त की शक्ति में वृद्धि तब शुरू हुई जब उनकी मुलाकात एक प्रतिभाशाली रणनीतिकार और विद्वान चाणक्य (जिन्हें कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है) से हुई।
  - चाणक्य ने चंद्रगुप्त की क्षमता को पहचाना और उन्हें एक कुशल नेता बनने के लिए प्रशिक्षित किया।
  - दोनों ने मिलकर नंद वंश को उखाड़ फेंकने की योजना बनाई, जो उस समय मगध पर शासन कर रहा था।
- नंदों को उखाड़ फेंकना:
  - 322 ईसा पूर्व में, चंद्रगुप्त मौर्य ने, चाणक्य के मार्गदर्शन से, नंद राजा धन नंद को सफलतापूर्वक हराया और मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
  - इसने मौर्य वंश की शुरुआत को चिह्नित किया, जो प्राचीन भारत के सबसे शक्तिशाली राजवंशों में से एक था।
- मौर्य साम्राज्य का विस्तार:
  - चंद्रगुप्त का साम्राज्य आधुनिक भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान सहित पूरे उत्तरी भारत में फैला हुआ था।
  - उनकी विजय एक मजबूत सेना और कुशल प्रशासन द्वारा सुगम हुई।

मौर्य साम्राज्य का उदय:

1. प्रशासन:
   - चन्द्रगुप्त मौर्य ने अत्यधिक संगठित प्रशासनिक व्यवस्था लागू की।
   - उसने अपने साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया, प्रत्येक का मुखिया एक गवर्नर होता था।
   - जानकारी इकट्ठा करने और नियंत्रण बनाए रखने के लिए साम्राज्य में जासूसों (अमात्यों) का एक विशाल नेटवर्क था।
2. अर्थव्यवस्था:
   - मौर्य साम्राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि, व्यापार और खनन के कारण फली-फूली।

- चंद्रगुप्त ने व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए मानकीकृत बाट और माप की शुरुआत की।

3. परंपरा:
   - चंद्रगुप्त मौर्य को एक मजबूत केंद्रीकृत प्रशासन स्थापित करने के लिए जाना जाता है, जिसका बाद में मौर्य वंश के शासकों और भारत में उसके बाद के साम्राज्यों ने पालन किया।
   - उनके वंश ने अपने पोते अशोक के अधीन मौर्य साम्राज्य के स्वर्ण युग की नींव रखी।
4. पतन और उत्तराधिकार:
   - माना जाता है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने 298 ईसा पूर्व के आसपास सिंहासन छोड़ दिया था और जैन सन्यासी बन गए थे।
   - उनका उत्तराधिकारी उनका पुत्र बिंदुसार बना, जिसने साम्राज्य का विस्तार जारी रखा।

LEARNING MANTRAS